The Academic
International Journal of Multidisciplinary Research

An Online Peer Reviewed / Refereed Journal
Volume 3 | Issue 2 | February 2025
ISSN: 2583-973X (Online)
Website: www.theacademic.in

# स्त्री शिक्षा पर महात्मा गांधी का चिंतन: एक विश्लेषण

**डॉ0 ओमप्रकाश कौशिक**

अतिथि व्याख्याता (समाजशास्त्र)

स्वर्गीय श्री देवी प्रसाद चौबे जी शासकीय महाविद्यालय गांड़ई, जिला खैरागढ़ छुईखदान, छत्तीसगढ़

**ARTICLE DETAILS**

**Research Paper**

**Accepted:** 26-02-2025

**Published:** 14-03-2025

**Keywords:**

*गांधी जी, बुनियादी शिक्षा, बालिका शिक्षा, चिंतन, स्वालंबन, सामाजिक जागरूकता, नैतिक शिक्षा, महिला सशक्तिकरण*

**ABSTRACT**

महात्मा गांधी ने स्त्री शिक्षा को सामाजिक परिवर्तन और स्वराज की नींव माना। उनके विचारों में स्त्री शिक्षा केवल साक्षरता प्राप्त करने तक सीमित नहीं थी, बल्कि इसे महिलाओं के नैतिक, व्यावहारिक और व्यावसायिक विकास से जोड़ा गया था। उन्होंने स्त्रियों को शिक्षित करने के लिए समाज में व्याप्त कुरीतियों को हटाने और उनकी स्वायत्तता को बढ़ावा देने की वकालत की। गांधीजी ने स्पष्ट रूप से कहा था कि स्त्री और पुरुष समाज रूपी गाड़ी के दो पहिए हैं, और यदि इनमें से एक भी कमजोर या अशिक्षित रह जाए, तो समाज का समुचित विकास संभव नहीं हो सकता। शोध-पत्र गांधीजी के स्त्री शिक्षा पर विचारों का विश्लेषण करेगा और उनके योगदान को आधुनिक संदर्भ में समझने का प्रयास करेगा।

**DOI : https://doi.org/10.5281/zenodo.15031974**

**1. परिचय :-** आज शिक्षा के क्षेत्र में नए कीर्तिमान स्थापित करती महिलाओं को देखकर ऐसा प्रतीत होता है जैसे भारत में यह स्थिति सदैव से रही हो। हमारे घरों की बच्चियाँ भारी बस्ते उठाए अपने भाइयों के साथ समान अधिकार के साथ स्कूल जाती रही हैं। किंतु वास्तविकता यह है कि परिस्थितियाँ हमेशा ऐसी नहीं थीं।

भारत में महिलाओं और बच्चियों को इस स्तर तक पहुँचाने के लिए समाज सुधारकों, राजनीतिज्ञों और शिक्षाविदों ने एक लंबी लड़ाई लड़ी है। सदियों तक घर की चारदीवारी में सीमित रहने वाली महिलाओं ने अनेक संघर्षों का सामना कर समाज की मुख्यधारा में स्थान बनाने के लिए नए अवसरों को अपनाया है। इस संघर्ष

में कई महान विभूतियों ने योगदान दिया, 19वीं शताब्दी में राजा राममोहन राय, ईश्वरचंद्र विद्यासागर और ज्योतिराव फुले जैसे समाज सुधारकों ने स्त्री शिक्षा की दिशा में कार्य किया, लेकिन महात्मा गांधी की भूमिका विशेष रूप से उल्लेखनीय रही है। उन्होंने महिलाओं को स्वतंत्रता संग्राम और सामाजिक परिवर्तन का अभिन्न अंग बनाया, जिससे उन्हें शिक्षा, समानता और स्वतंत्रता के अधिकार प्राप्त करने की दिशा में आगे बढ़ने का अवसर मिला। आज महिलाएँ हर क्षेत्र में नए मुकाम हासिल कर रही हैं, लेकिन अब भी कई जगहों पर महिला सशक्तिकरण के लिए प्रयास जारी रखने की आवश्यकता है। महात्मा गांधी ने इसे राष्ट्रीय आंदोलन से जोड़कर एक नई दिशा दी। उन्होंने महिलाओं को शिक्षित करने को न केवल उनका अधिकार माना, बल्कि इसे राष्ट्रीय पुनरुत्थान की आवश्यकता बताया।

महात्मा गांधी ने भी इस आंदोलन में एक विशेष भूमिका निभाई, जिसमें उन्होंने महिलाओं को स्वतंत्रता संग्राम का एक महत्वपूर्ण हिस्सा बनाया। उनका विश्वास था कि बिना महिलाओं की सहभागिता के कोई भी सामाजिक या राष्ट्रीय क्रांति सफल नहीं हो सकती। आज, भारत की महिलाएँ हर क्षेत्र में अपनी उपस्थिति दर्ज कराते हुए पुरुषों के बराबर अधिकार के साथ आगे बढ़ रही हैं। लेकिन फिर भी, कई स्थानों पर महिला सशक्तिकरण और समानता की दिशा में और अधिक प्रयास करने की आवश्यकता है।

**2. गांधीजी के स्त्री शिक्षा संबंधी प्रमुख विचार :-** गांधीजी का मानना था कि किसी भी समाज की उन्नति का पैमाना वहां की महिलाओं की शिक्षा और सशक्तिकरण से आंका जा सकता है। उन्होंने स्त्री शिक्षा को केवल किताबी ज्ञान तक सीमित न रखकर नैतिकता, चरित्र निर्माण, आत्मनिर्भरता और कौशल विकास से जोड़ा। महात्मा गांधी ने शिक्षा को केवल ज्ञान अर्जन का साधन नहीं, बल्कि समग्र जीवन विकास का माध्यम माना। उन्होंने अपने विचारों और प्रयोगों के माध्यम से शिक्षा को समाज से जोड़ा और इसे आत्मनिर्भरता, नैतिकता, सेवा तथा आध्यात्मिकता के साथ संयोजित किया।

**2.1 स्त्री शिक्षा की अनिवार्यता :-** गांधीजी के अनुसार, "यदि आप एक पुरुष को शिक्षित करते हैं, तो केवल एक व्यक्ति शिक्षित होता है; लेकिन यदि आप एक स्त्री को शिक्षित करते हैं, तो एक संपूर्ण परिवार शिक्षित होता है।" उन्होंने महिलाओं को घर की चारदीवारी से बाहर निकालकर शिक्षा और राष्ट्र निर्माण में भाग लेने के लिए प्रेरित किया। उनका मत था कि एक शिक्षित महिला अपने परिवार, समाज और राष्ट्र की प्रगति में सहायक होती है।

**2.2 व्यावहारिक और नैतिक शिक्षा :-** गांधीजी ने ऐसी शिक्षा प्रणाली की वकालत की, जो महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाए। उन्होंने शिक्षा को "नई तालीम" से जोड़ा, जिसमें हाथों का कौशल, नैतिकता और व्यावहारिक ज्ञान प्रमुख थे। उन्होंने सिलाई, कढ़ाई, बुनाई, घरेलू अर्थव्यवस्था और स्वास्थ्य संबंधी शिक्षा पर जोर दिया। गांधीजी

के अनुसार, स्त्रियों की शिक्षा ऐसी होनी चाहिए, जिससे वे न केवल आर्थिक रूप से स्वतंत्र बनें, बल्कि सामाजिक और नैतिक रूप से भी सशक्त हों।

**2.3 स्त्री शिक्षा और स्वतंत्रता संग्राम :-** गांधीजी ने महिलाओं को स्वतंत्रता संग्राम में भाग लेने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने कहा कि जब तक महिलाएं शिक्षित नहीं होंगी, तब तक वे अपने अधिकारों के लिए आवाज नहीं उठा पाएंगी। गांधीजी की प्रेरणा से सरोजिनी नायडू, अरुणा आसफ अली और कस्तूरबा गांधी जैसी महिलाओं ने स्वतंत्रता संग्राम में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

**2.4 स्त्री शिक्षा और स्वराज गांधीजी के अनुसार :-** "असली स्वराज तभी संभव है जब हमारी माताएं और बहनें शिक्षित और स्वतंत्र हों।" उन्होंने कहा कि स्त्री शिक्षा के बिना समाज में समानता नहीं आ सकती और न ही आत्मनिर्भरता प्राप्त की जा सकती है। गांधीजी की परिकल्पना में स्वराज केवल राजनीतिक स्वतंत्रता नहीं था, बल्कि सामाजिक सुधार और आत्मनिर्भरता से जुड़ा हुआ था।

**3 इस दुखद स्थिति के प्रमुख कारण :-** परिवार समाज और राष्ट्र के निर्माण में स्त्री पुरुष का इतना महत्वपूर्ण स्थान होते हुए भी आधुनिक भारत की अधिकांश स्त्रियां अशिक्षित हैं मामूली पढ़ने लिखने में भी वे सर्वथा अनाविज्ञ है शहरों में बालिकाओं को पटाने की कुछ व्यवस्था हुई है परंतु गांव की अवस्था अत्यंत सोचनी है देहातों में तो बालिकाओं को विद्याराम भी नहीं कराया जाता स्त्री शिक्षा की इस दुखद स्थिति के प्रमुख कारण निम्नलिखित हैं –

**प्रस्तुत बिंदुओं के विस्तृत व संभावित उपाय / समाधान निम्नलिखित हैं :-**

**3.1. आर्थिक समस्या :-** कई परिवारों की आर्थिक स्थिति कमजोर होने के कारण वे बालिकाओं की शिक्षा पर खर्च करने में असमर्थ होते हैं। प्राथमिकता अक्सर लड़कों की शिक्षा को दी जाती है, जिससे लड़कियों की शिक्षा उपेक्षित रह जाती है। पालक इच्छा रहते हुए भी अपनी लड़कियों को शिक्षा देने में लाचार हो जाते हैं/गांवों में लडकियां भी मजदुरी करके माता पिता को सहायता देती हैं वा परिवार के घरेलू कार्य भी करती हैं

**समाधान :-** सरकार और गैर-सरकारी संगठनों द्वारा छात्रवृत्ति, मुफ्त पाठ्यपुस्तकें, वर्दी, और अन्य शैक्षिक सामग्री प्रदान की जानी चाहिए। साथ ही, बालिकाओं की शिक्षा को प्रोत्साहित करने के लिए नकद प्रोत्साहन योजनाएं लागू की जा सकती हैं।

**3.2. पाठ्यक्रम :-** पाठ्यक्रम की जटिलता और उसकी प्रासंगिकता की कमी भी एक बाधा है। यदि पाठ्यक्रम स्थानीय आवश्यकताओं और संस्कृति के अनुरूप नहीं होता, तो बालिकाओं और उनके परिवारों की उसमें रुचि कम हो सकती है।

**समाधान :-** पाठ्यक्रम को स्थानीय संस्कृति, भाषा और आवश्यकताओं के अनुसार अनुकूलित किया जाना चाहिए, ताकि बालिकाएं उसे आसानी से समझ सकें और उनकी रुचि बनी रहे।

**3.3. जनता में निरक्षरता :-** जब माता-पिता स्वयं निरक्षर होते हैं, तो वे शिक्षा के महत्व को नहीं समझ पाते और अपनी बेटियों को स्कूल भेजने के प्रति उदासीन रहते हैं। शिक्षा के सांस्कृतिक महत्व से वह अनजान है/उसके नजर में बालिका को शिक्षा देना और शिक्षा देकर नौकरी करना समय और पैसा की बरबादी मानते ही हैं, एक बहुत बड़ा सामाजिक और धार्मिक पाप भी मानते हैं

**समाधान :-** प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रमों के माध्यम से माता-पिता को साक्षर बनाया जाना चाहिए, ताकि वे शिक्षा के महत्व को समझ सकें और अपनी बेटियों को स्कूल भेजने के लिए प्रेरित हों।

**3.4. विचारों की संकीर्णता :-** कुछ समुदायों में पारंपरिक और संकीर्ण सोच के कारण लड़कियों की शिक्षा को आवश्यक नहीं माना जाता। देश के अधिकांश परिवारों में, विशेषकर ग्रामों में महिलाओं का घर से निकलना सम्मान के नजरिया से अच्छा नहीं माना जाता हैं / कई पलक यह समझते हैं कि पढ़ने लिखने से लडकियां बिगड़ जाती हैं/इसीलिए इन्हें घर के अंदर ही रहना चाहिए/

**समाधान :-** सामुदायिक जागरूकता कार्यक्रमों के माध्यम से लोगों की सोच में परिवर्तन लाया जा सकता है। सफल शिक्षित महिलाओं के उदाहरण प्रस्तुत करके प्रेरणा दी जा सकती है।

**3.5. प्रथा-प्रथाओं का प्रभाव :-** दहेज प्रथा, पितृसत्तात्मक समाज, और अन्य सामाजिक कुरीतियां लड़कियों की शिक्षा में बाधा उत्पन्न करती हैं। ऐसे परिवारों की कमी नहीं, जहां पर्दा प्रथा के कारण गांव के स्कूल में जाना सम्मान और मर्यादा का उल्लंघन समझा जाता हैं

**समाधान :-** सामाजिक सुधार आंदोलनों के माध्यम से इन कुरीतियों के खिलाफ जनजागरण किया जाना चाहिए। कानूनों का सख्ती से पालन और उनका प्रचार-प्रसार आवश्यक है।

**3.6. बाल विवाह :-** कम उम्र में विवाह के कारण लड़कियों की शिक्षा अधूरी रह जाती है। बाल विवाह के कारण बहुत कम उम्र में लड़कियों का विवाह करते है जिससे वे गृहस्थी के जाल में फंस जाती हैं सपने में भी पढ़ने लिखने का विचार नहीं आता गांवों में विवाहित लड़कियों को स्कूल भेजना सामाजिक प्रथा के खिलाफ माना जाता हैं/को

**समाधान :-** बाल विवाह निषेध कानूनों का सख्ती से पालन किया जाना चाहिए। साथ ही, समुदायों में बाल विवाह के दुष्प्रभावों के बारे में जागरूकता बढ़ाई जानी चाहिए।

**3.7. प्रशिक्षित अध्यापकों और बालिका विद्यालयों का अभाव :-** ग्रामीण क्षेत्रों में प्रशिक्षित महिला शिक्षकों और बालिका विद्यालयों की कमी के कारण लड़कियों की शिक्षा प्रभावित होती है।

**समाधान :-** ग्रामीण क्षेत्रों में अधिक बालिका विद्यालयों की स्थापना की जानी चाहिए। साथ ही, महिला शिक्षकों की भर्ती और प्रशिक्षण पर विशेष ध्यान दिया जाना चाहिए, ताकि माता-पिता अपनी बेटियों को सुरक्षित महसूस करते हुए स्कूल भेज सकें। इन समाधानों के माध्यम से हम स्त्री शिक्षा में सुधार ला सकते हैं, जो परिवार, समाज, और राष्ट्र के समग्र विकास में महत्वपूर्ण योगदान देगा।

**4. गांधीजी द्वारा स्त्री शिक्षा के क्षेत्र में किए गए प्रयास**

**4.1 नई तालीम (Basic Education):-** गांधीजी ने स्त्री शिक्षा को "नई तालीम" से जोड़ा, जिसमें व्यावहारिक और नैतिक शिक्षा को प्रमुखता दी गई। इस प्रणाली के तहत लड़कियों को आत्मनिर्भर बनाने के लिए बुनियादी कौशल और कुटीर उद्योगों से जोड़ा गया।

**4.2 सेवाग्राम और साबरमती आश्रम** :- गांधीजी ने अपने आश्रमों में लड़कियों और महिलाओं को व्यावहारिक शिक्षा देने की पहल की। सेवाग्राम और साबरमती आश्रमों में महिलाओं के लिए सिलाई, कताई, स्वास्थ्य शिक्षा और प्राथमिक चिकित्सा की शिक्षा दी जाती थी। महिलाओं को चरखा चलाना और खादी निर्माण सिखाया जाता था, जिससे वे आत्मनिर्भर बन सकें।

**4.3 हरिजन सेवक संघ और दलित स्त्रियों की शिक्षा** :- गांधीजी ने हरिजन सेवक संघ के माध्यम से दलित महिलाओं की शिक्षा पर जोर दिया। उन्होंने कहा कि जातिगत भेदभाव को समाप्त करने के लिए शिक्षा सबसे प्रभावी साधन है। गांधीजी ने बाल विवाह, दहेज प्रथा और पर्दा प्रथा जैसी सामाजिक कुरीतियों को दूर करने के लिए शिक्षा को माध्यम बनाया।

**5. आधुनिक संदर्भ में गांधीजी के विचारों की प्रासंगिकता**

गांधीजी के स्त्री शिक्षा पर विचार आज भी प्रासंगिक हैं। भारत सरकार द्वारा चलाई जा रही विभिन्न योजनाएं उनके विचारों से प्रेरित हैं, जैसे:

5.1 बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ योजना – लड़कियों की शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए।

5.2 सुकन्या समृद्धि योजना – लड़कियों की उच्च शिक्षा के लिए वित्तीय सहायता।

5.3 मिशन शक्ति और महिला सशक्तिकरण अभियान – महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाने के लिए।

5.4 कौशल विकास योजना – गांधीजी की "नई तालीम" की तर्ज पर व्यावहारिक शिक्षा प्रदान करना।

**6. निष्कर्ष (Conclusion)**

महात्मा गांधी का स्त्री शिक्षा पर चिंतन केवल किताबी ज्ञान तक सीमित नहीं था, बल्कि उन्होंने इसे व्यावहारिक, नैतिक और सामाजिक सुधार से जोड़ा। उनका मानना था कि स्त्री शिक्षा से न केवल महिलाएं आत्मनिर्भर बनेंगी,

बल्कि यह समाज और राष्ट्र की उन्नति में भी सहायक होगी। आज भी, जब हम महिला सशक्तिकरण की बात करते हैं, तो गांधीजी के विचारों को अपनाना अत्यंत आवश्यक है। उनके द्वारा सुझाए गए सिद्धांतों के आधार पर अगर शिक्षा नीति बनाई जाए, तो एक समृद्ध और समानता मूलक समाज की स्थापना संभव है।गांधी जी की यह शिक्षा दृष्टि आज भी उतनी ही प्रासंगिक है जितनी उनके समय में थी। आज भी शिक्षा प्रणाली में स्त्रियों की विशेष आवश्यकताओं पर पर्याप्त ध्यान नहीं दिया जाता। यदि हम गांधी जी की शिक्षा नीति को अपनाएं, तो बालिकाओं को ऐसी शिक्षा दी जा सकती है जो उन्हें आत्मनिर्भर बनाए, उनके स्वाभिमान की रक्षा करे और उन्हें समाज में समान अवसर दिलाए।गांधी जी की शिक्षा संबंधी विचारधारा केवल सिद्धांतों तक सीमित नहीं थी, बल्कि उन्होंने इसे व्यावहारिक रूप में भी लागू किया। उनकी "नई तालीम" और शिक्षा के उच्च स्तरीय उद्देश्य आज भी हमें एक बेहतर समाज और आत्मनिर्भर राष्ट्र की दिशा में मार्गदर्शन प्रदान कर सकते हैं।

## 7. संदर्भ (References)


1 कुलकर्णी सुमित्रा गांधी (2009), महात्मा गांधी मेरे पितामह व्यक्तित्व और परिवार किताब घर प्रकाशन नई दिल्ली पृष्ठ 182

2 स्पीचेज एंड राइटिंग्स ऑफ़ महात्मा गांधी पृष्ठ 424

3 गांधी जी (2006), मेरे सपनों का भारत, संग्राहक आर प्रभु, नवजीवन प्रकाशन मंदिर, अहमदाबाद, पृष्ठ 236

4 रोमियो रोल (2009), महात्मा गांधी जीवन और दर्शन, लोक भारती प्रकाशन, इलाहाबाद पृष्ठ 45

5 सुमन रामनाथ द्वारा संपादित (1968), शिक्षक और संस्कृति, उत्तर प्रदेश गांधी स्मारक निधि, सेवापुरी, वाराणसी, पृष्ठ 216

6 गांधी जी (2006),मेरे सपनों का भारत, संग्राहक आर के प्रभु, नवजीवन प्रकाशन अहमदाबाद, ईस्ट 244

7 आर्य साधना, मेनन निवेदिता तथा लोकनीता जिनी (2006), नारीवादी राजनीति संघर्ष तथा मुद्दे, हिंदी माध्यम का कार्यान्वयन निदेशालय, दिल्ली विश्वविद्यालय, नई दिल्ली

8 देसाई मीरा तथा ठक्कर उषा (2008), भारतीय समाज में महिलाएं, धूसीया शुभी द्वारा अनूदित, नेशनल बुक ट्रस्ट इंडिया, नई दिल्ली, पृष्ठ 11

9 कुमार राधा (2005), स्त्री संघर्ष का इतिहास, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली पृष्ठ 121

10 लाल रमन बिहारी (2004), शिक्षा के दार्शनिक एवं समाजशास्त्रीय सिद्धांत, रस्तोगी पब्लिकेशन, मेरठ पृष्ठ 187

11 शंभू नाथ द्वारा संपादित (2006), सामाजिक क्रांति के दस्तावेज, भाग 1 वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली पृष्ठ 454

12 शर्मा बी शर्मा, रामकृष्ण दत्त, सविता शर्मा (2009) भारतीय राजनीतिक विचारक रावत पब्लिकेशन, नई दिल्ली, पृष्ठ 198

13 शंभू नाथ द्वारा संपादित (2006), सामाजिक क्रांति के दस्तावेज भाग 1 पूर्व संदर्भित पृष्ठ 465

14 महात्मा गांधी – हिंद स्वराज

15 गांधीजी के लेख – यंग इंडिया, हरिजन

16 गांधी और शिक्षा – जे.पी. नायक

17 गांधी और नारी जागरण – रामचंद्र गुहा